

प्राचीन शास्त्र
प्राचीन राजनीतिक शास्त्र
प्राचीन राजनीतिक शास्त्र—प्राचीन राजनीतिक शास्त्र
प्राचीन राजनीतिक शास्त्र—प्राचीन राजनीतिक शास्त्र

“જે જીવન વિરોધી દેશની પુણીજાના ર્થ કોણુંચા
નાનાની કાલીન અદીંદે પૂર્વ હોય કાન્દાના રાદીંન.”

योजना नं. १:- देवदारी किंवा तित्वा गुहांचा विनाशकारी अनुदान :-

संस्कृत विद्या

(रोप) वर्ण कारणकी य अनुदान योग्यीकी कार्यविधी

(iv) विविध

ये बहिर वार्षिक व्यवस्थाएँ-२०१०, लापत्तिक व्यवस्था व्यवस्था, ४३-व्यापारिक व्यवस्था-२०१०, खेती व्यवस्था, दीन-हार व्यवस्था (१)(पर) व्यवस्थाका व्यवस्थाएँ व्यवस्था व्यवस्था (२०१०, १११), मानवी व्यवस्था-१ व्यवस्थाएँ व्यवस्थाएँ व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था.

खोजना सं-२ :- देवतास्तीना निर्धारित करना :-

(८) सामग्रीसे संबंध-

४० वर्षांकीत रैलीकी वरदा रुपरे ३००/- (स्वर्वे हीनते फल) इसके निवाह अनुपल चालीस अटीचा अनुसन्धानी भवन रखन्नाम चाहे।

(१) लोक अंगुष्ठान चक्का २० मार्कोंसिंह अविलम्बी देवकलालीना (विवेद) कर्तुरेप राजेन्द्र.
 (२) लग्नाकुमार अंगुष्ठानकलालीना लक्ष्मीदे लग्नु, देवकलालीने अमरनाथ, लक्ष्मी उपकरण, देवकलालीना चालाक चलार्नीना कर्तुरेप, लक्ष्मीना द चक्का विवेदस, गाराहार्द राज, दुर्ली बाली दुर्ली अविलम्बी देवकलालीन स्वीमिसर दुर्ली चालाक;

(दोन) रेवादासी शिर्षादि अनुदान

देवदासी नियोग अनुपायी जहर जारी किया दिन १०.१०.१० वार्षा अधिकार देती है। त्यस्युक्ते वा अद्वेदासपर्युक्ते या देवदासीकां भवत्य यात्री नियोगम अनुपाय वार्ष्यनाम्भावी अनुपाय नियोग होते, त्यसे त्वा व्यवस्थाविवरीत अनुपाय दिन १०.१० वार्षा वर्द्धन्ते वा या व्यवस्थाविवरीत अनुपाय वार्षा करते। अर्थात् देवदासी त्वा वी व्यवस्थे या व्यवस्थाविवरीत अनुपाय वार्षा वर्द्धन्ते वा या व्यवस्थाविवरीत अनुपाय वार्षा करते।

(ग्रीष्म) अर्द्ध कार्यकारी संसदीय विभागीय कार्यकारी

(एस) सेवानी

ए वर्तीन धर्म प्रवर्णनात्मक-२२३४, सामाजिक सुलभ व सम्बोध, १२-सम्बोधनात्मक-१०३, योग्यता सम्बोध, तीन-प्रतर दो-योग्य (१०)-सेवासीन निर्वाह अनुसार (२२३५-२५०१), यात्रानी इ-प्रवर्णन-१ क सेवासीनार्थीकाली द्वारी टाकात्व व चंगेर तस्वीरीन पाण्यात्मक.

पोलाना नं. १:- देवदातीच्या मुराम-मुरामीच्या यात्र्येश च शास्त्रेव साहित्यासाठी अनुदान :-

(ए) चैलेंजर्स

देवरामीवा १ झी से १० दी पर्याप्त युवा-प्रकृति लिखावाली भरा होनावरी बाबूलालावाने अमरावती देवरामीवा

(१) ग्रामीण युवताके	प्रतिविद्यार्थी	रु. ५५/-
(२) युवता	प्रतिविद्यार्थी	रु. १००/-
(३) कार चालाये संकेत	प्रतिविद्यार्थी	रु. ५०/-
(४) गल्लोटी (यूरोपियन)	प्रतिविद्यार्थी	रु. १५५/-
(५) गल्लोटी (जार्मनियन)	प्रतिविद्यार्थी	रु. १०५/-

(दोन) या द्वन्द्वान्वयादी खटी व गारी चारीवारावर्षी रामलीला-

(तीव्र) तर्जुं चक्रवर्तीं च वनस्पतं चेऽग्रीद्युं चार्यवान् ते

(पर) दिवाली

(१०४) पर्यावरण व विकास विभाग - एकादशीवार्षिक वृक्षारोपण योग्यता (२३४५, १९९१), योग्यता के प्रतिवर्ती व संस्कारणात्मक वर्णन द्वारा विवरित किया गया है।

योगाना छ. ५ :- देवतासीसस्ती वीज भाँहकल योगमा

(८) जोखानी व राजनी

कृषि व लोकान व्यापक, ग्रामोदयोग, कृषीउत्पादन, लोकाचारी व्यवस्था व्यापक स्वरूप उत्पन्न उत्तमविकासी देवदत्तीन वार्षीय अंतर्राष्ट्रीय उत्तमताने उत्तमविकासी व्यापक व्यापक रु. ३५०००/- (एवं वार्षीय इन्वर व्यापक) पर्याप्त रूपी योग्य योग्यता.

- (१) बैंकमुद्राएँ बन्ने थेहोन्य अर्जदाराम भारतीय लगातारी ३५% रकम दीय खाड़कर महजून लासन्नकरून बैंकेत भारतीय करी.
- (२) लासन्नजार्येत दीय खाड़कर महजून बैंकेत खाड़ीलेह रकमेची चालफेड र. ला.र.से.४% लाम्बा रहने अर्जदाराने रकमे लाग्यरेत्क अहे.
- (३) अर्जदाराने दैकेचम बन्नाची यात्राफेड दैकेचा प्रावित व्यापरण्युसार करावी.
- (४) अर्जदाराने प्रथम दैकेचम बन्नाची प्रताफेड करावी व त्यानाथा लासन्नाच्या दीय भाड़कसाची प्रताफेड दैकेने उत्तिष्ठेत्या इप्पकान्मार करावी.
- (५) अर्जदार रोकातोव्या वर १८ वर्षीयेत करी नसावी.
- (६) बन्नाचम अने दैकेने बगूर बेल्यान्नार कर्वे भन्नाईची याच बाड़ील दैकेने घूर्ये बेल्यान्नार व लासन्नाचे दीय खाड़कर दैकेच याचे काळावाल देण्यात.
- (७) अर्जदार यांगाच्याका अधिकांश रुक्यासाठी असला पाहीने.

(दोनों) जर्ब केराकारी कार्यपाली

- (1) या विवरणोंमें भारतीय संविधान वैज्ञानिक संवेदनों द्वारा व्यूहात विकास नमूनात्मक अर्थ संविधान देशदास्त्रों विकास भवित्व वाल विकास अधिकार्यालयों द्वारा दर्शाया गया।
- (2) दूसरे वर्ष भारतीय वैज्ञानिक संवेदनों द्वारा व्यूहात विकास भवित्वात्मक अर्थ संविधान देशदास्त्रों द्वारा विकास अधिकार्यालय द्वारा दर्शाया गया।

(३८) देवदत्त

शा योग्यता अवधारित-५ रुपै०, राजनीतिक सुरक्षा व सम्बन्ध योग्याई रुपै०, २२ राजनीतिक अवधारित-५००-रुपै० (वी) प्रधानमंत्रिक वोकल्पालक्षण योग्यता (१) राजनीतिक सुरक्षा अवधारित योग्यता (५२३५ रुपै०), योग्यता व अवधारित योग्यता योग्यता व अवधारित योग्यता भाग्यालय-

योजना छ.५:- समाजात्मकोधनाचे छार्ट करणाऱ्या स्कॅंडरेली संस्थांमा अनुदान

(एक) एकत्रितीय सामग्री

ऐसाही साल काट करनासाठी रामाज आवेदनापाये करावे प्रभावितावे करतात्त्वा अंदूलीकृत स्वतंत्रतेची मालाना धर्मप्रवाचन करावेकार्या
हू (१०,०००/-) (पूर्णपूर्ण दूनार काला) आपके द्वारा सामने पाठ्यक्रमाने देण्यात आवे.

(होए) या अलगावाली जटी पर उसी चालीसालों समर्थन

- (१) वै अनुराग व्याख्यात एवं दाव अनुराग व्याख्या।
- (२) देवदासी व्याख्यान अव्याख्यानाने देवदासीये प्राचलय अस्त्रोने एवं निरुद्ध गायू भेदो आकृता था एवं निरुद्धपतील वार्ताएँ वै प्राचलये व्याख्या ३० भैलालन्त शरद अनुराग व्याख्या करता थेैल। (भिन्नोः चोलापूरुष, याकाशी, सोलापूरुष, उद्यमव्याख्या, नारद, लालू, शिष्यतुर्ती, रत्नानीरी, धूमे धूमर्दी।)
- (३) का वाचनेकाली अनुरागव्याख्या उन्ने करण्यापूर्वी दासोने देवदासी एवं निरुद्धपतील विवरण हीन वारे व्याख्याने भरीव व्याख्याये व्याख्या देसोने अस्त्राद्य।
- (४) सार्वजनिक विषयात अविवितवाद, १९५० विषया भक्तव्यैव सोम्या गोरखो अविवितवाद, १८५० वासी दासोंवी परंराजी द्वादोसी अस्तावी।
- (५) भग्नर अनुराग भेदोऽवैद्य देवदासी व्याख्या निर्धूक्यासादी प्रसार व दधार अवर्धनम्-स्वाक्षर व्याख्यात वारे व वारावे द्वयोगीलह प्रवाचनवद व्याख्या व्याख्यातात्त्व स्वाक्षित वित्त्वा योग्यता व वार विद्याम् अविवितव्यात्त्वा वावे।
- (६) एवंवद व्याख्या केन्द्रोन्त अनुरागव्याख्या उक्तव्यैवित प्रवाचनवद विनिरुद्धवाद व्याख्या अनुराग व्याख्या व्याख्या व्याख्या व्याख्या।
- (७) का दोन्नेवासी अवै करण्यासादी व्याख्या अवर्धन्या गरवार्धन्या । यसे अग्नोर नीरात्मी द्वादोसी अस्तावी।

(तीन) अपर्याप्ति व अपर्याप्ति संज्ञीयी वाक्यांकी

- (१) संवित लाभारक्षणे निहित नव्यांकांत अर्थे संवित नित्य विद्या व वात विकास अधिकार्यालाके द्वारा वातव्यांत स्वरूप कराया।
- (२) विनियोग विद्या व वात विकास अधिकार्यालाकी अस्तीती उत्तमी कल्प अवस्था विकारात्मक विनियोग विद्या व वात विकास अधिकार्यालाके द्वारा कराया।
- (३) लापुरा, विश्वा व वात विकास, भूतिला व वात विकास, वातारण्ड राम, पुर्वे वान्ना स्वरूप कराया।

(पर) दोषादित्य

४ योग्य वर्ष प्रकाशनीसंख्या-२०३५, सामग्रिक संस्था व भूमिका, १२०-हायाजाम्बाज-१०३, भैरव भूमिका, त्रिपुरा राज्य

पोलना राज.इ.:- वेदावास्तविका भूलां-मुहर्विकारीसा व्यवाहीरुद्ध :-

(८) अस्त्रांग विज्ञान ३

ऐतिहासिक गुरु-गुरुओं द्वारा देवताओं की शुभित उपलब्ध थी जबकि यज्ञों द्वारा देवताओं की सत्त्वता अवश्यक नहीं थी।

- (१) सर्वेनिक विषयात अविवाह, ११०० निवा भारतीय राज्य नेतरावी अविवाह, १८५० भारतीय राज्य नेतरावी नामांकन।
- (२) ग्रामीणी अविवाह नियमी व्यवस्था व्यवस्था।
- (३) ए वास्तवीयूत व्यवस्थावाला युवती-युवतीकोठारी अव इवाहातील ३०% युवती-युवती इवाह अनुबंध इवाह
- (४) वास्तवीयूत युवती-युवती वार, वार, विवाह, वारीक युवातो, वाराव, दोषविवाह वारावी, वारावी इ. संस्कृतवाचम् युविवाह वारोता
- (५) वाराव उपायातील वार उपायातील वार वाराव वाराव वारा वारावातील लारावातील विवाह अवावातील युवाता वारावातील इवाह वेष्या वारा।
- (६) वेष्यावातील अवावात युवती-युवती ए वास्तवीयूत इवाह अनुबंध इवाह।
- (७) वास्तवीयूती वारावात इवाह ५% वाराव।

(प्र०) संस्कृत वाक्यालय

यहाँ तक की विवरणीय संख्यों से देखा जाता है कि अनुसूचित वर्गीय वर्गीय व अन्य वर्गीय वर्गों के बीच विवरणीय संख्या २०% से अधिक अंतर है।

(a) *soft* *case*

(३) अवधीनण

(तीन) खोल्नेवाली भव्य विधियाँ

(1) ऐसाहो निवास युक्ती देख जानकार ऐसाहो युक्तो देखायेग, वार्डमन्सल, रि. कोर्टलायर.
 (2) अपनी निर्दिष्ट विवाह प्रतिवाद देखायी याहो देखायेग, रि. साहारी.

(पर्व) लोकसंगीत

२०१८ वर्षे राजीवीनी-२०१८, गोपीनाथ राजे व अन्यां, २०१८-वर्षात्तमानी-२०१८, चैत्रा राजाय, गोपीनाथ राजे

सरकारी संस्कार वाले बोलते हैं कि यह नहीं।

(पांतोन युल्मर)

四

मा. रामदासांचे संक्षिप्त-

प्रायद्वयांश्चापि समिव.

માનુષની જીવની રાણી

सर्व भूमि / राज्यपाली पांचे उत्तमी संस्कृत

आयुष्म, भविला के बाल विकास आयुष्मान्य, यातांक ताल, पुणे -२

सर्व दिव्यांशुं पूर्णं व चारु दिव्यांशु वैष्णवीं

सर्व लिप्ता चहिला च चाल लिप्तारा अभिलारी

जारी नियमानुसारे मूल्य कार्यकरी अधिकारी

मर्द विलक्षणतारो

सर्व विस्ता रानिक

योग्यिता

सामाजिक नियम, मानवांची वाचन नियमांचा अ. ८०/१९८०/संस्कारकृती-१०००/संस्कारकृती-१०००, दि. १०.६.१९८०

योग्यिता

देशातील युवांसांची योग्यिता कायद्यातीली घासावाना आवृत्तीचा सामाजिक नियमांची घटी

- (१) शानि. स.क.सां.का.कौ.व. प.विक्र.एतदकृत्यात्मा-८५/१९८०/१(१८)संस्कृ.३, दि.१३.६.१९८८
- (२) शानि. स.क.सां.का.कौ.व. प.विक्र.एतदकृत्यात्मा-८५/१९८०/१(१८)संस्कृ.३, दि.१३.६.१९८८
- (३) शानि. स.क.सां.का.कौ.व. प.विक्र.एतदकृत्यात्मा-८५/१९८०/१(१८)संस्कृ.३, दि.२१.गंगास्ट.१९८९
- (४) शानि. स.क.सां.का.कौ.व. प.विक्र.एतदकृत्यात्मा-८५/१९८०/१(१८)संस्कृ.३, दि.२२.६.१९८९
- (५) शानि.म.व.स.क.विक्र.दीपालात्मा-१०१३/१९८३.३८८/कृ-२, दि.११.८.१९९४
- (६) शानि.म.व.स.क.विक्र.दीपालात्मा-१०१३/१९८३.३८८/कृ-२, दि.११.८.१९९४
- (७) शानि.म.व.स.क.विक्र.दीपालात्मा-१०१३/१९८३.३८८/कृ-२, दि.१२.८.१९९४
- (८) शानि.म.व.स.क.विक्र.दीपालात्मा-१०१३/१९८३.३८८/कृ-२, दि.१२.८.१९९४
- (९) शानि.म.व.स.क.विक्र.दीपालात्मा-१०१३/१९८३.३८८/कृ-२, दि.१२.८.१९९४
- (१०) शासन युवांसांची योग्यिता कायद्यातीली घासावाना आवृत्तीचा सामाजिक नियमांची घटी
- (११) शासन परिषद्याक म.व.वा.वि.विक्र.दीपालात्मा-१०१३/१९८३.३८८/कृ-२, दि.२२.६.१९८८
- (१२) शासन परिषद्याक म.व.वा.वि.विक्र.दीपालात्मा-१०१३/१९८३.३८८/कृ-२, दि.२२.६.१९८९

